शास्त्री प्रथम खण्ड
राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
जयद्रथ-वध
कवि – मैथिलीशरण गुप्त

रोका बहुत था हाय! मैंने जाइये मत युद्ध में,
माना न तुमने किन्तु कुछ भी निज विपक्ष विरुद्ध में।
हैं देखते यद्यपि जगत में दोष अर्थी जन नहीं,
पर वीर जन निज नियम से विचलित नहीं होते कहीं।।

भावार्थ– प्रस्तुत पद में उत्तरा विलाप करते हुए उस समय की बातें सोचते हुए अपने पति को युद्ध में जाने से रोकना चाहती थी। उत्तरा अपने पति की मृत्यु के पश्चात् विलाप करती हुई कहती है हाय! मैंने आपको युद्ध में जाने से बहुत रोका था, किन्तु तुमने उस समय न जाने के पक्ष में मेरी किसी बात को भी नहीं सुना था। यह ठीक गरज रखने वाले लोग इस संसार में दोषों को नहीं देखते हैं। वीर और पराक्रमी लोग अपने नियम से कभी नहीं हटते हैं।

कवि मैथिलीशरण गुप्त का कहना है कि इस संसार में जो सच्चे वीर होते हैं वे अपने प्राणों को न्योछावर करके भी अपने नियमों का पालन करते हैं।

कवि उत्तरा के विलाप का मार्मिक चित्रण करते हुए उसकी मनोदशा का विस्तार से वर्णन किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 12/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कु०सं० महावि० तुलसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निबंधमाला' गद्य भाग

शीर्षक:- 'महा-मानव- सागर-तीरे'

लेखक:- डॉ० रमाकान्त पाठक

प्रश्न:- बंगाल प्रतापी वीरों की धरती है। लेखक के इस कथन पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- लेखक डॉ० रमाकान्त पाठक अपने प्रसिद्ध निबंध 'महा-मानव- सागर-तीरे' में बंगाल को प्रतापी वीरों की धरती कहा है। इसको सिद्ध करने के लिए उन्होंने बहुत सारे उदाहरणों का उल्लेख किया है। लेखक कहता है कि यहाँ अंग्रजों से लोहा लेने के लिए दुधमुँहे खुदीराम जैसे बच्चे भी खेल-खेल में आजादी के लिए बम फेंका करते थे। आजादी के इन दिवानों ने तो भय को जीत लिया था। यही कारण है कि अंग्रेज बंगाल से काफी भयभीत रहने लगे थे। उन्हें लगा कि यहाँ का मजिस्ट्रेट भी छिपकर 'कृष्ण-चरित' और आनन्दमठ लिखता है। वह नौकरी से भी बड़ी चीज अपने स्वतंत्रता संग्राम को समझ रहा था। वह दफ्तर से निकलने के पहले ही मजिस्ट्रेटी के कोट को वहीं खूँटी में टाँग देता है।

बंगाल की भूमि रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुभाषचन्द्र बोस, ईश्वरचन्द विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की धरती है। यह वैसे लोगों की धरती है जहाँ के महामानव प्रताड़ना की अग्नि पीकर अंग्रजों के अत्याचार का कालकूट पान कर साक्षात् शंकर बन गये हैं। इस गंगासागर क्षेत्र के महासागर के किनारे जिन महामानवों ने जन्म लिया है वे सम्पूर्ण भारत के लिए एक प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं।

लेखक का कहना है कि बंगाल की मिट्टी में ही एक ऐसी विशेषता है जो त्याग, तप, बलिदान एवं कुर्बानी में सम्पूर्ण देश के नेतृत्व की क्षमता रखती है। बंगाल एवं अन्य प्रान्तों के अन्तर को रेखांकित करते हुए पाठकजी पश्चिमी सभ्यता के स्वागत के ढंग की चर्चा करते हैं। कहते हैं कि इस कलिकाल में इस माया सुन्दरी के स्वागत में दो भाई लड़े हुए। एक तमिलनाडु दूसरा बंगाल।

शेष आगे-

परन्तु दोनों के स्वागत, स्वागत में अन्तर था। जिस के कारण अंग्रेजी साम्राज्य में रेशमी फीते के प्रथम शहीद हुए बंगाल के महाराज नन्द कुमार और भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल बने तमिलनाडु के नेता श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

लेखक का विश्वास है कि हर संकटों में त्राण दिलाने वाली इस बंग भूमि में ही किसी दिन इस सागर के तट पर महामानव नारायण का अवतार हो तो कोई आश्चर्य नहीं। ऋषियों की भारतमाता को सैकड़ों बार प्रणाम।

डॉ० देव चरण प्रसाद
12/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं०महा०वि० खुशसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०- पत्र

द्वितीय- भाग-2 , गद्य खण्ड

शीर्षक - बातचीत , लेखक - बालकृष्ण भट्ट

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर—

प्रश्न:- अगर हममें वाक्शक्ति न होती तो क्या होता?

उत्तर:- हममें वाक्शक्ति न होती तो मनुष्य गूँगा होता, वह मूक बधिर होता। मनुष्य को सृष्टि की सबसे महत्त्वपूर्ण देन उसकी वाक्शक्ति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह समाज में वार्त्तालाप करता है। वह अपनी बातों को अभिव्यक्त करता है। यह प्रकृति का वरदान है। यदि हममें इस वाक्शक्ति का अभाव होता तो हम पशुओं के समान होते। जो सुख-दुःख हमें इन्द्रियों के कारण अनुभव करते है वह वाक्शक्ति न रहने के कारण नहीं कह पाते।

प्रश्न:- 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है?

उत्तर:- 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' बातचीत करने की कला-प्रविधि है जो यूरोप के लोगों में ज्यादा प्रचलित है। इस बातचीत की प्रविधि की पूर्ण शोभा काव्य कला प्रवीण विद्वत् मंडली में है। ऐसी चतुराई के साथ इसमें प्रसंग छेड़े जाते हैं कि जिन्हें सुनकर कान को अत्यन्त सुख मिलता है। साथ ही इसका अन्य नाम 'शुद्ध गोष्ठी' है। इस प्रकार आर्ट ऑफ ~~कनव~~ कनवरशेसन मनुष्य के आपस में बातचीत की उत्तम कला है जिसके द्वारा मनुष्य बातचीत को हमेशा आनन्दमय बनाये रहता है।

प्रश्न:- 'बातचीत' के सम्बन्ध में बेन जॉनसन के क्या विचार हैं?

उत्तर:- बेन जॉनसन के अनुसार बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। वास्तव में जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 12/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ